ISSN : 2278-1773

सम्मेलन पत्रिका

शोध-त्रैमासिक

भाग-११०, संख्या-१

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
१२, सम्मेलन मार्ग, प्रयागराज-२११००३
वेबसाइड : http://hindisahityasammelan.org.
ई-मेल : hs.sammelan.alld@gmail.com

ISSN : 2278-1773, यू०जी०सी० केयर लिस्ट पत्रिका

प्रकाशक
कुन्तक मिश्र
प्रधानमंत्री
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
१२, सम्मेलन मार्ग, प्रयागराज-३
दूरभाष (कार्यालय)- ०५३२-२५६४१९३

- सम्मेलन पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचारों तथा प्रस्तुत किये गये तथ्यों से प्रकाशक व सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं। इसका पूर्ण उत्तरदायित्व लेखक का होगा।
- इस पत्रिका में विशेषज्ञों द्वारा समीक्षित एवं अभिनिर्णित लेख प्रकाशित किये जाते हैं।

एक प्रति का मूल्य : १०५ रु०
वार्षिक मूल्य : ४०० रु०

विदेश के लिए वार्षिक मूल्य : २० डालर (डाक व्यय अतिरिक्त)

वार्षिक सदस्य बनने के लिए **४००.०० रु०** का ड्राफ्ट या पोस्टल-आर्डर हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग १२ सम्मेलन मार्ग, प्रयागराज-३ के नाम भेजें। कृपया चेक या मनीआर्डर न भेजें।

मुद्रक :
सम्मेलन मुद्रणालय
१२, सम्मेलन मार्ग, इलाहाबाद-३

विषय-सूची

सम्पादकीय

क्र.सं.	आलेख	लेखक	पृष्ठ
	साहित्य आलेख		
१.	अज्ञेय का संस्कृति चिन्तन	–प्रो० अखिलेश कुमार शंखधर	७–१५
२.	प्राचीन भारत में इतिहास लेखन की परम्परा	–डॉ० शिवाकान्त त्रिपाठी	१६–३०
३.	निर्मला पुतुल के काव्य में स्त्री स्वर	–डॉ० प्रियंका सिंह	३१–३६
४.	स्वतन्त्रता का अमृतकाल और हिन्दी कविता	–डॉ० त्रिभुवन गिरि	३७–४४
५.	बेचारा भला आदमी : हरिशंकर परसाई	–डॉ० प्रशान्त गौरव	४५–५१
६.	एक संघर्षशील नारी की कहानी : अन्या से अनन्या	–नीलम साव	५२–५६
७.	मुक्तिबोध की सामाजिक अभिव्यक्ति एवं उसकी प्रासंगिकता	–सौरभ तिवारी	५७–६३
८.	परम्परा भंजक कवि अज्ञेय	–सुदेश कुमार	६४–७०
९.	वैश्विक दुनियाँ में आदिवासी भाषा और संस्कृति	–सचिन टोप्नो	७१–७५
१०.	वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महादेवी वर्मा के संस्मरण साहित्य की प्रासंगिकता	–आभा सिंह	७६–८३
११.	विमर्शों की परिधि में 'रेत समाधि'	–स्निग्धा पाण्डेय	८४–८७
१२.	निर्मल वर्मा के उपन्यासों में आधुनिक भावबोध का स्वरूप	–अभिषेक सिंह	८८–९३
१३.	गाँधीवादी सर्वोदयी चिन्तन का नैतिक आयाम	–डॉ० संजय शर्मा	९४–१०२
१४.	बाजारवाद के आइने में समकालीन हिन्दी कविता	–डॉ० अजय कुमार	१०३–११०
१५.	सूखने चिनार : सैनिक जीवन और गिरते मानवीय मूल्य	–आकांक्षा मिश्रा	१११–११७
१६.	स्त्री-विमर्श का बृहद् आख्यान : आवां	–डॉ० मजीद शेख	११८–१२६
१७.	सामाजिक जीवन का यथार्थ और 'सही नाप के जूते' उपन्यास	–मनीष कुमार शुक्ला	१२७–१३२

गाँधीवादी सर्वोदयी चिन्तन का नैतिक आयाम

–डॉ० संजय शर्मा

"परहित सरिस धरम नहिं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।"

गोस्वामी तुलसीदास रचित 'रामचरित मानस' के उत्तरकांड की यह चौपाई बताती है कि 'दूसरों की भलाई करने के समान कोई धर्म नहीं है और दूसरों को दुःख पहुँचाने के समान कोई अधर्म नहीं है।' हिसां, छल-छद्म, अवसाद, असमानता, असंतोष, संवेदनहीनता व स्वार्थपरता जैसी प्रवृत्तियों को धारण करने वाले आधुनिक भौतिकवादी समाज के मूल में 'स्वहित' है। पश्चिमी विचारधाराएँ 'स्वहित' की साधना के लिए अपनाए जाने वाले साधनों की नैतिकता-अनैतिकता पर विचार नहीं करती। मानव आतंक के साए में जी रहा है। विश्व पहले इतना असुरक्षित नहीं था। लाख प्रयासों के बावजूद उदारवाद एवं मार्क्सवाद समस्या का समाधान ढूढ़ नहीं पाया। अपनी श्रेष्ठता का दंभ भरने वाला पश्चिमी उदारवादी लोकतन्त्र शांति स्थापना का प्रयत्न बंदूको से करते-करते अप्रासंगिक होता जा रहा है।

अब लोग शांति-सुकून से जीवन बसर करना चाहते हैं। ऐसा तभी होगा जब हम जीवन में परस्पर प्रेम, भाईचारा, सहयोग से ओत-प्रोत 'सर्वे भवन्तु सुखिनः', 'वसुधैव कुटुम्बकम्', 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' व 'रस्किन' की 'अनटू दिस लास्ट' पर आधृत गाँधीवादी सर्वोदयी विचार को आत्मसात करेंगे। गाँधीवादी सर्वोदयी चिंतन एक ऐसे समाज व्यवस्था की परिकल्पना करता है जिसमें सभी का भला हो, उत्थान हो। इसमें सभी तत्त्वों को नैतिकता की कसौटी पर कसा गया है।

श्री निवास तिलक, 'द मिथ ऑफ सर्वोदयाः ए स्टड़ी ऑफ विनोवाज् कांसेप्ट' (२०२३), जीतेन्द्र कुमार सोनी, 'सर्वोदय की अवधारणाः गाँधीय प्रतिमान' (२०२२), त्रिपुरारी उपाध्याय, 'महात्मा गाँधी का स्वदेशी विमर्श' (२०२२), बी.आर. मेहता, 'भारतीय राजनीतिक चिंतन के आधार' (२०१७), मीना बरडिया, 'गाँधी के आध्यात्मिक सर्वोदय पर पुनः दृष्टिपात' (२०१७), प्रो. बी.एम. शर्मा, डॉ. रामकृष्णदत्त शर्मा, डॉ. सविता शर्मा, 'गाँधी दर्शन के विविध आयाम' (२०१५) व जे.सी. जौहरी, सीमा जौहरी, 'आधुनिक राजनीति विज्ञान के सिद्धान्त' (२०१२) ने गाँधी के सर्वोदय संबंधी विचारों का अध्ययन किया है। शोध पत्र में गाँधीवादी सर्वोदयी चिंतन के नैतिक आयाम का अध्ययन किया गया है, जिसमें द्वितीयक स्रोत प्रयुक्त हुए हैं।

महात्मा गाँधी (१८६९-१९४८) का दर्शन मानव जाति के लिए अमूल्य धरोहर है। उनका जीवन उनके विचारों व आदर्शों की अभिव्यक्ति है। कोई भी व्यक्ति, सरकार चाहे गाँधी दर्शन की कितनी ही आलोचना करे, अपनी नैतिक औचित्यता का अर्जन गाँधी के नैतिक विचारों से ही प्राप्त करने की कोशिश करती है। सर्वोदय के आकांक्षी गाँधी जी ने फ़ोनिक्स-आश्रम (१९०३), टालस्टाय-फार्म (१९१०), सेवाश्रम-आश्रम (१९१५), साबरमती-आश्रम (१९२०) व सेवाग्राम-आश्रम (१९३३) की स्थापना की। गाँधी जी स्थापित आश्रमों में जीवन का सार था-'जात पाँत पूछे नहीं कोई, हरि को भजे सो हरि का होई।' गाँधी के लिए समाज सेवा 'आत्म दर्शन' का नाम है। आश्रमों में सत्य-अहिंसा, सदाचार, धर्म, सत्याग्रह व सर्वोदय के सिद्धान्तों के आधार पर प्रशिक्षण दिया जाता था। आश्रम एक प्रकार से गाँधी की प्रयोगशाला थे और आश्रमवासी उनके यंत्र। भारतीय स्वतन्त्रता के सेनानी ने आजादी के लिए असहयोग आन्दोलन (१९२०), सविनय अवज्ञा आन्दोलन (१९३०) व भारत छोड़ो आन्दोलन (१९४२) चलाया। गाँधी जी के व्यक्तित्व का ही कमाल था कि घर की चाहारदीवारी से बाहर निकल महिलाएं, उपेक्षित वंचित वर्ग (दलित, आदिवासी) व शोषित किसान गाँधी के साथ हो लिए। गाँधी जी ने अपने विचार, व्यवहार व कार्य से लोगों के हृदय में इस भावना को उभारा कि 'हम एक हैं'। इसी राष्ट्रीयता की भावना ने उन्हें राष्ट्रपिता बना दिया। गाँधी जी ने अपने जीवन काल में अनेक पुस्तकों की रचना की और पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया, जिसमें 'इण्डियन केस फॉर स्वराज' (१९३२), 'स्टौरी अहफ माई एक्सपेरीमेंट विद ट्रुथ' (१९४०), 'सत्याग्रह' (१९३५), 'द साइंस अहफ सत्याग्रह' (१९५७), 'हिन्द स्वराज' (१९५८) जैसी पुस्तकें व 'इण्डियन ओपिनियन, यंग इंडिया, नवजीवन, हरिजन, हरिजन सेवक, हरिजन बंधु जैसी पत्र-पत्रिकाएं हैं। गाँधी जी ने ग्राम उद्योग संघ, तालीम संघ व गो-रक्षा संघ भी बनाए। गाँधी जी के विचारों पर हिन्दू धर्म ग्रन्थों (वेद, पतंजलि योग-सूत्र, गीता, रामायण, महाभारत) ईस्लाम, इसाई, बौद्ध व जैन धर्म, पश्चिमी विचारक (जॉन रस्किन, टॉलस्टाय, डेविड थोरो) भारतीय विचारक गोखले व तिलक का प्रभाव है। मार्टिन लूथर किंग नेल्सन मंडेला, आंग सू की जैसी हस्तियां गाँधी जी से प्रभावित हैं।

सर्वोदय संस्कृत भाषा के दो शब्दों- 'सर्व' व 'उदय' से मिलकर बना है। जिसका मतलब है-सबका उदय, सबका उत्थान। सर्वोदय भारतीय संस्कृति का आदर्श वाक्य है। जैन मुनि समंतभद्र का कथन है, "सर्वापदाममंतकरं निरंतं सर्वोदयं तीर्थमिदं तवैव।" 'बसुधैव कुटुम्बकम्' व 'सर्वे भवन्तु सुखिन्' वाक्यांश सम्पूर्ण धरा को एक परिवार के रूप में देखता है व सर्व कल्याण को प्रमुखता देता है। महात्मा गाँधी का 'सर्वोदय' दर्शन जॉन रस्किन से प्रभावित है। बात उन दिनों की है जब गाँधी जी दक्षिण अफ्रीका प्रवास कर रहे थे। एक बार वे जोहान्सवर्ग

से डरबन की यात्रा रेल से कर रहे थे, तब उनके मित्र पोलक ने रस्किन की पुस्तक 'अनटू दिस लास्ट' जिसका अर्थ है- 'अंत वाले को भी' पढ़ने को दी। गाँधी जी पुस्तक पढ़कर अत्यन्त प्रभावित हुए और गुजराती में 'सर्वोदय' नाम से अनुवाद किया। रस्किन द्वारा प्रतिपादित किए गए सिद्धान्त गाँधी जी के प्रेरणास्रोत बने। गाँधी जी ने आत्मसात किया कि-

एक व्यक्ति की भलाई में ही सबकी भलाई निहित है।

वकील एवं नाई दोनों के कार्य की कीमत एक सी होनी चाहिए, क्योंकि आजीविका का अधिकार सबको एक समान है।

मेहनत मजदूरी कर किसान का जीवन ही सच्चा जीवन है।

रस्किन से उन्होंने यह तत्त्व ग्रहण किया कि समाज में साधारण से साधारण आदमी का भी महत्व है और इसीलिए उनके कल्याण का प्रयत्न किया जाना चाहिए। इस पुस्तक के संदेश ने गाँधी जी के जीवन में रचनात्मक परिवर्तन कर दिया। सर्वोदय के सिद्धान्त के बारे में गाँधी जी कहते हैं कि, ''इन सिद्धान्तों में से प्रथम से तो वे पूर्व में परिचित थे; दूसरे सिद्धान्त के प्रति उनका दृष्टिकोण स्पष्ट नहीं था जबकि तीसरे सिद्धान्त पर उन्होंने कभी विचार ही नहीं किया।'' रस्किन की पुस्तक से उन्हें यह ज्ञात हुआ कि प्रथम सिद्धान्त में ही शेष दोनों सिद्धान्त समाविष्ट हैं। उन्होंने स्वयं को इन सिद्धान्तों पर अमल करने के प्रयत्नों के प्रति समर्पित कर दिया।

'सर्वोदय' का विचार गाँधी चिंतन की आत्मा है। गाँधी जी जिस काल में 'सर्वोदय' का विचार गढ़ रहे थे उस समय पाश्चात्य जगत में उपयोगितावादी चिंतन की धूम थी। समग्र पश्चिम 'अधिकतम व्यक्तियों के अधिकतम सुख' का मंत्र जाप कर रहा था। ऐसे काल खंड में गाँधी जी ने 'भौतिक सुख' की जगह 'आध्यात्मिकता' को महत्त्व दिया। गाँधी जी ने 'सर्वोदय' को जीवन दर्शन, मानव समाज का लक्ष्य व साध्य-साधन माना। उनकी मान्यता है कि 'सर्वोदय' एक जीवन दर्शन, एक जीवन पद्धति तथा नए समाज की रचना की दिशा में किया जाने वाला स्तुत्य प्रयास है। गाँधी जी 'सर्वोदय' को एक नैतिक कर्तव्य मानते हैं और 'सर्वोदय' में रत रहने वाले को कर्मयोगी बताते हैं। गाँधी जी ने उपयोगिवाद की नैतिक आधार पर निंदा करते हुए कहा, 'अहिंसा का पुजारी उपयोगितावाद का समर्थन नहीं कर सकता। वह तो 'सर्वभूत हिताय' यानि सबके अधिकतम लाभ के लिए ही प्रयत्न करेगा।...तर्क संगत बने रहने के लिए उपयोगितावादी अपने को कभी बलि नहीं कर सकता परन्तु अहिंसावादी हमेशा मिट जाने को तैयार रहता है।' गाँधी जी सत्य व अहिंसा पर आधारित स्वराज में ही सबका उत्थान देखते हैं। उनका विचार था कि 'सर्वोदय' हरेक मानव-समाज का परम लक्ष्य है। वहाँ तक

जाना प्रत्येक का परम कर्तव्य है। वे कहते हैं, 'सर्वोदय' के मार्ग में पहाड़ भी आ सकते हैं, वेगवती नदियाँ भी रास्ते में बाधा स्वरूप आ सकती हैं और बड़े-बड़े खड्डे-खाइयाँ आदि भी आ सकती हैं किन्तु इन बाधाओं के होते हुए भी हमें अपने परम लक्ष्य की ओर जाने से कोई रोक नहीं सकता। इसी इच्छा शक्ति के आधार पर हम अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सकते हैं। गाँधी जी के सर्वोदयी समाज में प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे के साथ प्रेम बंधन में बधा होगा। प्रत्येक मानव 'पर-पीड़ा' को स्व-पीड़ा समझेगा। मानव-मानव के मध्य संबंध समानता पर आधारित होगा। गाँधी जी कहते हैं, 'सभी व्यक्ति परस्पर प्रेम में बंधे होंगे। उनमें कोई भेद-भाव नहीं होगा। राजा तथा किसान, हिन्दू तथा मुसलमान, छूत तथा अछूत, गोरे तथा काले, अपराधी तथा संत सभी बराबर होंगे। कोई भी दल अथवा व्यक्ति किसी भी दल अथवा व्यक्ति का शोषण नहीं करेगा। 'सर्वोदय' समाज के सभी सदस्य समान होंगे। प्रत्येक को अपने श्रम का उचित फल मिलेगा। व्यक्ति की रक्षा तथा उनकी संरक्षकता का कार्य सबल करेंगे। इस प्रकार सभी व्यक्ति सबका भला करने में सहायक होंगे।'

गाँधी जी का सर्वोदय नैतिक मूल्यों से ओत-प्रोत है। इसमें धर्म, अहिंसा, राजनीति का आध्यात्मीकरण, साध्य-साधन की पवित्रता, सत्य-ईश्वर, सत्याग्रह, विश्वशांति, आत्मत्याग, परहित जैसे तत्वों का समावेश है। गाँधी जी का धर्म 'मानव सेवा' है। यह हिन्दू-मुसलमान नहीं है। इसका अर्थ है, 'विश्व के सुव्यवस्थित नैतिक शासन पर भरोसा।' गाँधी जी कहते हैं कि, 'धर्म के साथ नैतिकता अभिन्न रूप से जुड़ी है, जैसे ही हम नैतिकता को खो बैठते हैं, वैसे ही हम धार्मिक नहीं रह जाते।' गाँधी जी कहते हैं कि, 'अहिंसा सर्वोच्च धर्म व नैतिकता है।' 'जो समान भाव से सारे विश्व के लिए श्रेयस्कर है।' गाँधी जी के सर्वोदय का परम लक्ष्य राजनीति का आध्यात्मीकरण है। वह बताते हैं कि, 'धर्म शून्य राजनीति मौत के फन्दे के समान है जो आत्मा को नष्ट कर देती है।' गाँधी जी का मानना है कि जीवन का लक्ष्य आत्म साक्षात्कार है। गाँधी जी का विश्वास था कि आत्म साक्षात्कार के लिए आवश्यक है कि सम्पूर्ण मानव जाति के साथ तादात्म्य स्थापित किया जाये और सबके हित में, सबके कल्याण हेतु कार्य किया जाये। राजनीति में भाग लिए बिना वह ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि मनुष्य के सभी कार्य जीवन के समविष्ट के अविभाज्य अंग होते हैं। आज आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और शुद्ध धार्मिक कार्य एक-दूसरे से पृथक नहीं किए जा सकते। गाँधी जी का विचार है कि, 'जो मनुष्य देश-प्रेम को नहीं जानता, वह अपने सच्चे कर्तव्य या धर्म को नहीं जानता है।' अतः 'धर्म मानव-सेवा, सर्वहित, सर्व कल्याण, देश-प्रेम सभी का समविष्ट रूप है।' गाँधी जी आगे कहते हैं कि, 'वही व्यक्ति आध्यात्मिक है जो सम्पूर्ण समाज के वैभव एवं स्वार्थ को त्यागकर सम्पूर्ण समाज की भलाई के लिए कार्य करता है। गाँधी जी इस बात को मानते

हैं कि हम विश्व की नैतिक व्यवस्था में विश्वास रखते हुए सत्य, अहिंसा और प्रेम आदि नैतिक नियमों की श्रेष्ठता स्वीकार करें।'

गाँधी जी की मृत्यु के उपरान्त उनके निष्ठावान शिष्यों (विनोवा भावे, जे. बी. कृपलानी, जयप्रकाश नारायण, दादा धर्माधिकारी, धीरेन्द्र मजूमदार, काका कालेलकर व के.जी. मशरूवाला) ने सर्वोदय समाज की अवधारणा को मूर्त रूप देने के लिए आन्दोलन किया।

डॉ. सम्पूर्णानन्द (१८९०-१९६९) का मत है कि 'सर्वोदय' का अर्थ है उदय, सबका विकास, किन्तु उदय शब्द का अभिप्राय केवल भौतिक समृद्धि के लिए नहीं, बल्कि आध्यात्मिक कल्याण के लिए है।'

गाँधी जी के मानस पुत्र विनोवा भावे (१८९५-१९८२) ने गाँधी जी के 'सर्वोदय' दर्शन को व्यवहारिक बनाया। उन्होंने भूदान आन्दोलन (१९५१), सम्पत्ति दान, जीवन-दान, ग्राम-दान आन्दोलन चलाया। विनोवा जी कहते हैं कि, 'सर्वोदय' की बुनियाद है सत्य-निष्ठा। गाँधी जी के निर्वाण के पश्चात् सर्वोदय समाज की कल्पना लोगों में फैल गयी परन्तु यह प्रश्न उठता है कि यह सर्वोदय समाज क्या है ?....यह शब्द हमें कहता है कि हमें चन्द लोगों का उदय नहीं करना है, अधिक से अधिक लोगों के उदय से हमें संतोष नहीं है वरन् सबके उदय से ही समाधान होगा। छोटे-बड़े, दुर्बल-सबल, जड़-बुद्धिमान इन सबका उदय होगा, तभी हम चैन लेंगे। ऐसा विशाल भाव हमें यह शब्द दे रहा है।' वह आगे कहते हैं, 'सर्वोदय एक आदर्श अद्वैत है और उसकी नीति समन्वय की है।' विनोवा भावे गीता के 'निष्काम कर्म' संबंधी ज्ञान को सर्वोदय का मूल आधार स्वीकारते हैं। उनका मत है, 'आध्यात्मिक ज्ञान व मानव मात्र के प्रति दया हिन्दू धर्म की दो प्रधान धारणाएं हैं- सर्वोदय के इस वेदान्तिक आधार की खोज उस श्रद्धा के अनुकूल है जो गाँधी जी 'ईषोपनिषद्' तथा 'भगवतगीता' के प्रति रखते थे।'

दादा धर्माधिकारी (१८९९-१९८५) एक गाँधीवादी सर्वोदयी हैं। सर्वोदय के बारे में वे कहते हैं, 'सुबह वाले को जितना, शाम वाले को भी उतना ही प्रथम व्यक्ति को जितना, अन्तिम व्यक्ति को भी उतना ही, इसमें समानता और अद्वैत का वह भाव समाया है जिस पर सर्वोदय का विशाल प्रासाद खड़ा है।' वह गाँधी चिंतन में 'सर्वोदय' शब्द की व्यापकता, निहितार्थ व ध्येय के बारे में बताते हैं कि 'सर्वोदय शब्द भले ही नवीन हो किन्तु उसका अर्थ सबका जीवन साथ-साथ सम्पन्न हो इतना ही है। जीवन का अर्थ है- विकास, अभ्युदय या उन्नति। सभी का विकास हो इसीलिए सर्वोदय। परन्तु प्राचीन समय में अभ्युदय शब्द का प्रयोग केवल ऐतिहासिक वैभव के अर्थ तक ही सीमित था इसीलिए गाँधी जी ने केवल उदय शब्द का प्रयोग किया एक साथ समान रूप से सबका उदय हो, यही सर्वोदय का उद्देश्य है।'

लोकनायक जयप्रकाश नारायण (१९०२-१९७९) गाँधी जी के 'सर्वोदय' चिंतन को 'सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय' की विचारधारा मानते हैं। वह मानते हैं कि 'सर्वोदय' शक्ति का विरोधी विचार है, केवल निःस्वार्थ सेवा भावना एवं सामाजिक अनुशासन से ही तालमेल स्थापित हो सकता है।' वह सर्वोदय को 'जन समाजवाद' मानते हैं और 'समग्र क्रान्ति' का विचार देते हैं। जयप्रकाश नारायण ने भी स्वीकार किया कि पश्चिमी विचार मनुष्य में सद्गुणों को प्रोत्साहित व सामाजिक पुनर्निर्माण करने में सक्षम नहीं है। वह कहते हैं, 'मैं संतुष्ट हूँ कि मानव को अच्छाई के प्रोत्साहन को खोजने के लिए भौतिकवाद से आगे निकल जाना चाहिए। उसके उपसूत्र के रूप में मैं अनुभव करता हूँ कि सामाजिक पुनर्निर्माण का कार्य भौतिकवादी दर्शन की प्रेरणा से सफल नहीं हो सकता है।' जे. पी. सर्वोदय को एक कर्म दर्शन मानते हैं जो मानवता को शोषण मुक्त कर सकता है।

राम मनोहर लोहिया (१९१०-१९६७) एक समाजवादी विचारक हैं। लोहिया के विचारों पर जयप्रकाश नारायण की अपेक्षा गाँधीवाद का अधिक प्रभाव है। लोहिया ने ग्राम गणराज्य, गावों को आत्मनिर्भर बनाने, विश्व संसद, विश्व सरकार, विश्व शान्ति के सन्दर्भ में विचार दिए। लोकतांत्रिक समाजवादी लोहिया समाजवाद लाने के लिए गाँधीवादी तकनीक अपनाने पर जोर देते हैं। लोहिया ने सलाह दी कि यदि समाजवाद को जिंदा रखना है तो उसे गाँधीवादी सिद्धान्तों के अनुरूप विकसित करना चाहिए।

महात्मा गाँधी के अनुयायियों व शिष्यों ने 'सर्वोदय' को व्यवहारिक धरातल पर उतारने का प्रयत्न किया। सभी ने 'ईश्वर में विश्वास' पर बल दिया और उस विश्वास को मानव की अच्छाई में आस्था तथा मानवता की सेवा के समरूप माना। गाँधी जी के नैतिक सूत्रों को स्वीकारा परन्तु सामाजिक व सकारात्मक पक्षों पर अधिक बल दिया।

सर्वोदय का विचार भारतीय संस्कृति के मूल्यों के अनुकूल है। भारतीय संतो, महात्माओं ऋषियों ने अपने विचारों में नैतिक मूल्यों के महत्त्व पर बल दिया है। महात्मा गाँधी एक संत थे। वी. पी. वर्मा कहते हैं, "हमारा राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक जीवन एक रोग से ग्रस्त रहा है। हमारे युग का, संभवतः सभी युगों का रोग रहा है सत्ता की उन्मादपूर्ण तृष्णा, सहयोगपूर्ण गतिविधि तथा कष्टों की अपेक्षा प्रभुसत्ता को प्रिय माना जाता है। व्यक्तिगत समृद्धि की खोज में सेवा को त्यागा जा रहा है। इस प्रकार, मानवता लगभग नैतिक पतन तथा आचरित शून्यवाद के चरण में से गुजर रही है। सत्ता की पागलपन भरी भाग-दौड़ के युग में, सर्वोदय का महत्त्व आत्म-त्याग के स्थायी मूल्य पर बल देने में निहित है। यह दलीय झगड़ों, ईर्ष्याओं तथा प्रतियोगिता के स्थान पर सहकारितापूर्ण पारस्परिक संबंधों एवं व्यापक परहितवाद के पवित्र नियमों को लागू करना चाहता है। दलीय संघर्षों ने हमारे राजनीतिक जीवन को भ्रष्ट

तथा विकृत कर दिया है। ग्राम पंचायतों में बहुमत के मतदान के स्थान पर सर्व सहमति की विधि पर बल देकर सर्वोदय सर्वोच्च महत्त्व के नैतिक सिद्धान्तों को अभिव्यक्ति प्रदान कर रहा है, क्योंकि यह जोड़-तोड़ की चतुराई तथा अहंकार के स्थान पर सज्जनता व चरित्र की उच्चता को महिमा प्रदान करना चाहता है।

जैसे-जैसे हम पश्चिमी भौतिकवाद के कुचक्र में फँसते गये हमारा तन, मन उसका गुलाम होता गया। भौतिकवाद की विशिष्टताओं ने हमारे अंदर के इंसान को मार दिया। आज हमारे अंदर व्याकुलता है अकुलाहट है हम शांति-सुकून, अमन-चैन की हवा में सांस नहीं ले पा रहे हैं। ऐसे दमघोंटू वातावरण से मुक्ति दिलाने व सहृदयता दिखाने वाला-हमदर्द, शांति, सत्य-अहिंसा, भाईचारा, सत्याग्रह, प्रेम से सबको जीतने वाला, मानवता का पाठ पढाने वाला कोई व्यक्ति, विचार है तो वह है- महात्मा गाँधी व गाँधीवाद। भारतीय संस्कृति के उपासक ऋषि, सत्य के अन्वेषणकर्त्ता, अहिंसा के पुजारी महात्मा गाँधी का समग्र जीवन मानवता की सेवा को समर्पित रहा है। महात्मा गाँधी का 'सर्वोदय चिंतन सबके उत्थान की बात करता है। हरेक के दुख-दर्द-पीड़ा को अपना दुख-दर्द-पीड़ा समझने वाला मानव ही सच्चा मानव है- यह कर्तव्य पाठ पढाता है। गाँधी का सर्वोदय चिंतन भौतिक उत्थान की जगह नैतिक, आध्यात्मिक उत्थान की बात कहता है जो कि मुक्ति का मार्ग है। गाँधी के सर्वोदय रूपी शरीर की आत्मा हैं 'वसुधैव कुटुम्बकम', 'सर्वे भवन्तु सुखिन्', 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय'। हृदय स्थल है- 'वैष्णव जन तो तैने कहीए जो पीर पराई जाणै रें। आंखे रस्किन के 'अनटू दिस लास्ट' की हैं। गाँधी का सर्वोदय एक कर्मयोगी का कर्मयोग है। गांधीवादी सर्वोदयी चिंतन धारा आगे चलकर समाजवाद के भारतीय संस्करण को जन्म देती है, जिसको लेकर आगे बढने काम जयप्रकाश नारायण व लोहिया जी ने किया। गाँधी जी का सर्वोदय ही वह विचार व उपाय है जिससे कराहती मानवता का दुख-दर्द हरण किया जा सकता है। इसको अपनाकर आचरण करने की जरूरत है क्योंकि सेवा ही कर्म है, धर्म है, ईश्वर भक्ति है व मुक्ति का मार्ग है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१. गोस्वामी तुलसीदास, 'रामचरित मानस-उत्तरकाण्ड' गीता प्रेस, गोरखपुर
२. बलवंत सिंह, 'बापू का आश्रम परिवार', नवजीवन, अहमदाबाद, १९७२, पृ. ५
३. आशुतोष कुमार, "गाँधी की स्वराज सम्बन्धी अवधारणा", रूचि त्यागी (संपा.) 'भारतीय राजनीतिक चिंतन प्रमुख अवधारणाएँ एवं चिंतक', हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, २०१६, पृ. ३४६

४. आचार्य समंतभद्र, 'युक्त्यानुशासन', श्लोक ६२, इन साइक्लोपीडिया ऑफ जैनिज्म्, ६ दिसम्बर, २०२०, देखा गया ४ अगस्त, २०२४
५. महाउपनिषद्, टप्प७२
६. गरुण पुराण, ३५:५१, तैत्रिरीयोपनिषद्
७. महात्मा गाँधी, 'संक्षिप्त आत्मकथा', सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. ७६
८. महामा गाँधी, 'आत्मकथा' नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद, १६८७
६. वही
१०. महात्मा गाँधी, 'आत्मकथा', वही, पृ. २०७
११. रामजी सिंह, 'गाँधी दर्शन मीमांशा', बिहार ग्रन्थ अकादमी, पटना, १६७३, पृ. ४१-५६
१२. हिन्दी नवजीवन, ६ दिसम्बर, १६२६
१३. महात्मा गाँधी, 'आत्मकथा', वही
१४. भारत कुमारप्पा, 'सर्वोदय' नवजीवन प्रकाशन, १६५६, पृ. प्रस्तावना १
१५. हरिजन, १० फरवरी, १६४०
१६. यंग इण्डिया, २४ नवम्बर, १६२१, पृ. ३८५
१७. यंग इण्डिया, ११ अगस्त, १६२०
१८. हरिजन, १२ नवम्बर, १६३८, पृ. ३२६
१६. महात्मा गाँधी, 'माई रिलीजन', नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, १६५५, पृ. ३
२०. रोम्या रोला, 'महात्मा गाँधी', लंदन, १६२४, पृ. २४-४५
२१. हरिजन, २४ दिसम्बर, १६३८, पृ. ३६३
२२. यंग इण्डिया, भाग-२,३, पृ. २६६, १८४
२३. यंग इण्डिया, ११ अक्टूबर, १६२८
२४. सम्पूर्णानन्द, 'इण्डियन सोशलिज्म', एशिया पब्लिशिंग हाउस, १६६१, पृ. १
२५. विनोवा भावे, 'सर्वोदय विचार और समाजशास्त्र', अखिल भारतीय सर्वसेवा संघ, बनारस, १६६१, पृ. ५७
२६. विनोवा भावे, 'भूदान गंगा', वही, १६५७, पृ. १७४
२७. वही, पृ. १५५-१५६
२८. दादा धर्माधिकारी, 'सर्वोदय दर्शन' सर्व सेवा संघ वाराणसी, १६८५
२६. वही, पृ. १६
३०. बी.एम. शर्मा व अन्य 'भारतीय राजनीतिक विचारक', रावत पब्लिकेशन, २०१६, पृ. ३६८
३१. जयप्रकाश नारायण, ए पिक्चर ऑफ सर्वोदय सोशल आर्डर अखिल भारतीय सेवा संघ, तंजौर, १६५५, पृ. ६
३२. वही

३३. इस्लाम अली, "राम मनोहर लोहिया", अजय कुमार, इस्लाम अली (संपा.) 'भारतीय राजनीतिक चिंतन संकल्पनाएं एवं विचारक', डार्लिंग किंडरस्ले (इण्डिया) प्राइवेट लिमिटेड, २०१२, पृ. २६८
३४. वही
३५. वी.एन. टण्डन, 'द सोशल एण्ड पोलिटिकल फिलासफी ऑफ सर्वोदया आफ्टर गाँधी', सर्व सेवा संघ प्रकाशन, १९६५, पृ. २००-२०१
३६. वी.पी. वर्मा, 'आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन', लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, १९८६, पृ. ३६१

-असिस्टेंट प्रोफेसर-राजनीति विज्ञान
सहकारी पी.जी. कॉलेज,
मिहरावां, जौनपुर